IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का जीवन एवं उनके द्वारा विरचित नाटक 'स्नेहसौवीरम् में रस विवेचन

Dharam Singh

Assistant Proferssor of Sanskrit

Govt. College Bhattu Kalan (Fatehabad)

संस्कृत साहित्य का विश्व साहित्य में अद्वितीय स्थान है। भारतीय विद्वानों ने ही नहीं अपितु अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने भी संस्कृत साहित्य की उत्कृष्टता की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। काव्य की विभिन्न विधाओं में सर्वाधिक महत्वर्पूण रूपक है। रूपक रचना को कवित्व की चरम सीमा माना गया है। इसमें श्रव्य व दृश्य दोनों प्रकार के काव्यों की विशिष्टता समाविष्ट है। मेरी रूचि विशेष रूप से रूपकों में होने के कारण मैने डॉ0 भारकाराचार्य त्रिपाठी द्वारा विरचित नाटक के एक अंश का शोध पत्र हेतु चयन किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्नहेहसौवीरम् नाटक के अन्तर्गत रस विवेचन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। फिर भी ज्ञान की सीमाओं को देखते हुए कुछ त्रुटियाँ रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वप्रथम लेखक के जीवन पर प्रकाश डाला गया है तदुपरान्त उनके नाटक (रूपक) स्नेहसौवीरम में रस विवेचन को वर्णित किया गया है।

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी – डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का जन्म प्रयाग चित्रकुट अंचल में अवस्थित पाण्डर ग्राम में अनन्त चतुर्दशी □□□□ (23.09.1942) को हुआ था। इनका बचपन ज्योतिष विद्या के पारंगत विद्वान पिता श्री रामप्यारे त्रिपाठी की सारस्वत छाया में बीता। स्नेहसौवीरम् के प्रणेता ने उन्हें जन्मदो ज्योतिषां व्योम्नि वेल्लतत्विषां कोविदो रामवत् सुप्रियः प्राणवद् ।[1]

ये कसौटा नरेश के दरबार में प्रधान ज्योतिषी थे। इन्होने स्नातक उपाधि से दीक्षाएं इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। मध्यप्रदेश की शासकीय शिक्षा सेवा में छतरपुर, अम्बिकापुर तथा रीवा के स्नातकोतर महाविद्यालय इनके कार्यस्थल रहे। इनकों अनेक पुरस्कारों द्वारा भी अभिनन्दित किया गया है। इन्होने समकालीन संस्कृत रचना धर्मिता से जुड़ी अनके रचनाऐं लिखी जिनमे गद्यद्वादशी, अजाशती, लक्ष्मीलांछनम्, सुतनुकालास्यम्, मृत्कूटम्, निलिम्प काव्यम्– निर्झरिणी, संस्कृतजीवनम, स्नेहसौवीरम् मानसमधु, दूर्वा (24 अंक) भोजभारती, संस्कृत की पहचान, बदले पंख, तौर्यत्रिकम्, लघु–रघु आदि।

उन्होने 1958 में लेखन कार्य आरम्भ किया। वे 2004 में उच्चशिक्षा विभाग म0 प्र0 से विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हो चुके है। डॉ0 भास्काराचार्य त्रिपाठी को उनके लघु काव्य मृत्कूटम् पर दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा उतर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा विशिष्ट पुरस्कारों से अभिनन्दित किया गया है। उन्होंने अपनी संस्कृत कविता पाण्डरग्रामः में जन्मभूमि के संदर्भ में लिखा है :

रजः पाण्डरा नित्यमुदयते मनसि पाण्डरोग्रामः

तृणे–तृणे बन्धुता यत्र पवने च वैरविश्रामः।

साकेत विरहस्य कल्पशः स्वयं कुटुम्बी रामः

आजिगमिषति यम ध्वनीन इव सोयं धन्यो।।[2]

स्नेहसौवीरस् में रस विवेचन –

वस्तु नेता और रस नाट्य के तीन मुख्य तत्व होते हैं। वस्तुनेतारसस्तेषां भेदकः।[3] काव्य दृश्य हो या श्रव्य उसका आह्लादक होना अति आवश्यक है। इसी आह्लादकता के कारण आचार्य मम्मट ने काव्य को विद्याता की सृष्टि से और कवि को विद्याता से उत्कृष्ट बताया है। काव्य सृष्टा कवि नियति के नियमों से रहित सुख–दुख मोह से विलक्षण, एकमात्र आहलादक अन्य की अधीनता से वियुक्त तथा नौ रसों से रूचिर काव्य की रचना करते हुए सृष्टि प्रक्रिया में प्रजापति से श्रेष्ठ सिद्ध होता है। काव्य की अपेक्षा नाटक में रसास्वादन सरलता से होता है।[4]

स्नेहसौवीरम् नाटक में मुख्य रस श्रृंगार है। डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी ने स्नेहसौवीरम् नाटक में श्रृगांर के दोनों भेदों संयोग तथा विप्रलम्भ का प्रयोग किया है। भारतीय नाटय समीक्षा के अनुसार रस रूपक का मुख्य तत्व है। पाश्चात्य आलोचको ने प्रभावोन्विति को ही नाटक का प्राण कहा है। समालोचकों का कथन है कि दोनों में बहुत कुछ समानता है। विभाव, अनुभाव और संचारीभावों के संयोग से सहृदयों को जो एक अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है वही रस है। इस रस की प्रतीति कराना ही रूपक का प्रयोजन होता है। विभिन्न रूपकों में भिन्न–भिन्न प्रकार के रसों की प्रधानता और गौणता होती है। स्नहेसौवीरम् नाटक मे मुख्य रस श्रृगांर है तथा त्रिपाठी ने श्रृगांर के दोनों भेदों संयोग तथा विप्रलम्भ का प्रयोग इस नाटक मे किया हैं। इसके अतिरिक्त सहायक रसों के रूप में हास्य, अद्भूत, शांत, वीर एवं भयानक रसों का प्रयोग भी किया गया है। इन सबका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है :–

श्रृंगार रस – श्रृगार शब्द की व्युत्पति है श्रृंगस्य आगमनं हेतुर्यस्य स श्रृगांरों रसः।[5] श्रृगार रस के दो भेद होते है संभोग और विप्रलम्भ। इस नाटक में श्रृंगार के दोनों भेदों को वर्णित किया गया है।

संभोग श्रृगार – स्नेहसौवीरम् नाटक के पंचम अंक मे संयोग श्रृंगार अभिव्यक्त होता है। जब राम और शबरी का मिलन होता है। शबरी राम के चरण प्रक्षालन करती हुई कहती है कि –

मत्प्रत्तानि काषायफेनिलफलान्यास्वाद्य देव त्वया

कृष्टः कर्मविपाकशीलकरणग्रामः सकामस्तनोः,

पश्यन्ती प्रिय ते प्रसन्नवदनाम्भोजं समीहे चिरं

नेत्रे मीलयितु समाधिकलया किं नाम दृश्यान्तरैः।[6]

प्रस्तुत श्लोक में शबरी राम के चरण हृदय से लगाकर समाधिस्थ होती हुई कहती है कि हे देव। मेरे द्वारा निवेदित कसैले, बेर चखते हुऐ आपने इस शरीर से कामनाशील और कर्मफल झेलती इन्द्रियों की चेतना खींच ली है। हे प्रियवर। अब तो इसी प्रसन्न मुख कमल पर लगी आंखे बन्द होकर चिर–समाधि में जाना चाहती हैं। इन्हें दूसरा कुछ क्या देखना यहां शबरी द्वारा राम के चरण हृदय से स्पर्श कराना संयोग श्रृंगार है और शबरी राम का स्पर्श कर चिरसमाधिस्थ हो जाती है। मतंगाश्रम में राम का आगमन सुनते ही शबरी की बरबस उत्सुकता में श्रृंगार रस के मजुंल अनुभाव व्यक्त होते है।

यथा –

पत्रपाते वसन्तावतारः संवृतः केवलं त्वारापर्याकुलाया

नेत्रच्छविरीक्षिता, तयाऽनुमित्सामि यत् सौभाग्यवत्या :–

उरसि जलधिशीले रागमातङ् गमीले

रघुवरिविधृसङ्गा वृद्धिमापुस्तरंगाः

स्मृतिशतपरिवारः कीर्णरत्नानुहारः

स्फुरितनयनतीरं शिश्रिये चाप्यधीरम्।[7]

इस श्लोक का कवि ने स्वयं सुन्दर हिन्दी अनुवाद भी किया है। राम की प्रतीक्षा और उन्हें देखकर शबरी के रससिक्त सभी उद्गार श्रृंगार रस की सांगोपांग अभिव्यक्ति कराते है।

विप्रलम्भ श्रृंगार – जहाँ अनुराग तो अति उत्कृष्ट है, परन्तु प्रिय का दर्शन नहीं होता, उसे विप्रलम्भ श्रृगांर कहते है। स्नहेसौवीरम् के अनेक स्थलों पर विप्रलम्भ श्रृंगार की सुन्दर अभिव्यभ्जना की गई है। प्रथम अंक में ही जब शबरी राम को याद करती हुई कहती है।

मम वरहृदयेशः कोऽपि विश्वोपकर्त्ता

वसति कलितवेषो रोमकूपेषु रामः,

अजतनुरूपयात– श्यामलश्रीरजोऽसौ

कपटपरिणयेऽस्मिन् पार्श्वबद्धो रूरोद।[8]

अर्थात – मेरे हृदय पर जिनका राज्य है, वे तो समूचे विश्व का उपकार करने वाले राम हैं। मेरे एक–एक रोमरन्धु में उन्हीं की झांकी सजी हुई है। वे अजन्मा श्यामवर्गी छाग की एक नई आकृति धारण करके इस छल विवाह में आये और पास में बच्चे रो रहे थे यही विप्रलम्भ श्रृगांर है। क्योंकि यहाँ शबरी का राम के प्रति अनुराग है लेकिन राम का समागम नहीं होता। शबरी के प्रत्येक रोमकूप और हर डोलती हुई सांस में राम समाये हुए थे, परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि समूचा जीवन विरह की ही कहानी बना रहा। केवल अन्तिम क्षणों में ही श्री राम ने शबरी को दर्शन दिये। अतः नाटक के प्रारभिंक चार अकों में ही विप्रलम्भ श्रृगारं की ही विविध वर्णी छटा अनुभवगोचर होती है।

हास्य रस– स्नेहसौवीरम् नाटक में स्थान–स्थान पर हास्य रस का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत नाटक में हास्य रस मुदगल विदूषक के चरित्र में अभिव्यक्त होता है नाटक के तृतीय अंक के प्रारम्भ में ही विदूषक द्वारा बोले गये श्लोक से हास्य रस की अभिव्यक्ति होती है।

पिनाक द्रुहो दर्शनार्थ समेताः

प्रयाता न के पुण्यसाकेतभूमिम्,

अजाकण्ठ– लोलस्तनाकारशीलो

न गन्तुं समर्थः खलो मुदगलोऽभूत।[9]

हास्य रस ह्रास प्राकृतिक होता है इसका स्थायी भाव ह्रास है। ह्रास का अभिप्राय है वाणी, वेष आदि की विकृतियों के द्वारा चित का विकास।[10]

अदभुत रस – अदभुत रस का स्थायी भव विस्मय है। विलक्षण वस्तुओं के दर्शन, श्रवण आदि से चित का एक विकास सा होता है, वही विस्मय होता है। इसका आलम्बन विलक्षण वस्तु है। उस वस्तु का गुण वर्णन ही उद्दीपन है। स्वेद रोमाञ्च नेत्र विकास आदि अनुभाव हैं। वितर्क, आवेग, हर्ष आदि व्यभिचारी भाव हैं।

स्नेहसौवीरस नाटक में अदभूत रस की अभिव्यक्ति पंचम अंक में होती है जब कलापी चोंच और पंजों से यज्ञदेवी खुरचता है। राम और लक्ष्मण निमीलित नयना देवी को निहारते हैं। परिक्रमा करते हैं।

लक्ष्मण आश्यर्च प्रकट करते हुए राम को कहते हैं भैया घटनाक्रम तो पहले कभी नही देखा।

पुष्पासारः सभृङ्गस्तिरयति शबरीं दिव्यसौरभ्यसारः

सोऽयं कीर्णावसादः स्फुरति सुरपथे दुन्दुभीनां निनादः,

धूमच्छायात्मकानां प्रसरति विसरः कोऽपि पिष्टातकानां

भूमेरूत्कम्पितकाया विशति च विवरं वत्सला कायामाया।[11]

प्रस्तुत श्लोक में अद्भुत रस का रमणीय परिपाक होता है।

शान्त रस – शान्त रस का स्थायीभाव निर्वेद है। इस का दूसरा नाम शम भी है। शम या निर्वेद का अर्थ है – वैराग्य दशा में आत्मरति से होने वाला आनन्द।[12]

स्नेहसौवीरस नाटक में शान्त रस की अभिव्यक्ति पंचम अंक के अन्त में होती है। जब शबरी के समाधि लेने पर लक्ष्मण राम से समाधि तक जाने का योगमार्ग पूछते है। शबरी मानों स्नेह के बेर बाँटती हुई सबको जता जाती है कि आत्मा में उतरी सत्यनिष्ठा तथा कार्य कौशल ही योग है। स्नेहसौवीरम् नाटक का प्रस्तुत श्लोक शान्त रस का अनुठा उदाहरण है।

जार्तिनैव विरोधसेतुरथवा हेतुर्भवेदुन्नतेः

कर्म ज्ञानमयं यशोविनिमयं सार्वत्रिंक विन्दतु,

कामं शुध्यतु पंचतत्वनिकरः सत्त्वाकरः प्राणिनां

लोकः संस्कृतिकल्पपादपवनीं सानातनीं रक्षतु।[13]

वीररस – वीर रस का स्थाईभाव उत्साह है। कार्य करने में स्थिर उद्योग का नाम उत्साह है। शबरी द्वारा अने धर्म की परिपालना करने से धर्मवीर रस है। स्नैहसौवीर नाटक में वीर रस प्रथम अंग में ही झलकता है। जब नायिका शबरी एक छागबलि के लिए अपने विवास से जंगल भाग जाती है।

स्वकीय पाणिग्रह–पुण्यकाले

विमृद्य वेदीं शबरी क्षणेन,

पृच्छन्त्यहोछागविमर्दहेतु

पलायितामण्डपतो वनालीम्।[14]

भयानक रस :– भयानक रस का स्थायीभाव भय है। किसी भीषण वस्तु के कारण चित्त में जो विकलता हो जाती है। उसी चित्तवृत्ति का प्रकटीकरण भय कहलाता है।[15] स्नेहसौवीरस नाटक के तृतीय अंक में भयानक रस अभिव्यक्त होता है। जब शालिहोत्र मंतग से कहते है कि इधर से भी तो निशाचरों का भय है। इस पर मतंग कहते है कि यही भय दूर करने के लिए तो दोनों रघुवंशी वीर वन में गये हैं। तृतीय अंक का प्रस्तुत श्लोक भयानक रस का सर्वोतम उदाहरण है

विराध एकलोऽत्र पापचातुरः क्षुधातुरः

ततश्च दस्यवो विराधगृध्नवोऽधिशेरते

अयोमुखीह केवला निशाचरी भयङ्करी

ततो बहुत्र कण्टकान्ययोमुखानि शेरते।[16]

इस प्रकार डॉ0 भास्काराचार्य त्रिपाठी ने अपने नाटक स्नेहसौवीरम् में मुख्य रस श्रृंगार के साथ–साथ सहायक रसों के रूप में हास्य, भयानक, शान्त, वीर एवं अदभुत रसों का मनोहारी प्रयोग किया है। समीक्षकों ने स्नेहसौवीरम् नाटक में विरह श्रृगांर एवं शान्त रस और भक्ति रस प्रवण संवेदना की अदभुत सम्पदा रेखाकिंत की है।

नीरंहितदृङ्नीरं रसमीरं शममातनोत्यमीरम्।

धी–रंडितरघुवीरं सुगवीरं स्नेहसौवीरम्।

Dharam Singh

Assistant Proferssor of Sanskrit

Govt. College Bhattu Kalan (Fatehabad)

पाद टीका

1 मृत्कूटम् – पृष्ठ VII
2 निर्झरिणी पृष्ठ 77–78

3 दशरूपक 1.11

4 नियतिकृत नियम रहितां हलोदैमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरस रूचिरां निमिर्तिमादधती भारती कवेर्जयति।। (काव्य प्रकाश 1.1)
5 नाटयशास्त्र भरतमुनि
6 स्नैहसौविरम् अंक 5 श्लोक नं0 18
7 स्नैहसोवीरम् अंक 5 श्लोक नं0 7
8 स्नैहसोवीरम् अंक प्रथम श्लोंक नं0 4
9 स्नेहसोवीरम् अंक 3 श्लोक नं0 1
10 वागादि वैकृतैश्चेतोविकासोहास इष्यते। (साहित्य दर्पण 3.276)
11 स्नेहसोवीरम् अंक 5 श्लोक नं0 20
12 शमो निरीहवस्थायामात्या विश्रामजं सुखम्। साहित्य दर्पण 3.280
13 स्नेहसौविरम् अंक 5 श्लोक नं0 23
14 स्नेहसौविरम् अंक प्रथम श्लोक नं0 3
15 रौद्रशक्तया तु जनितं चित वैकलव्यदं भयम् (साहित्य दर्पण 3.178)

16 स्नेहसौवीरम् अंक 3 श्लोक नं0 10

सन्दर्भ सूची

1 संस्कृत काव्यषास्त्र का इतिहास पी वी काणे

2 संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय

3 काव्यप्रकाष चौखम्बा विदयाभवन वाराणसी

4 दशरुपक साहित्य भंडार मेरठ

5 नाटयषास्त्र भरतमुनि

6 भाव प्रकाषन

7 साहित्य दपण आचार्य विष्वनाथ

8 स्नेहसौवीरम् **डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी**